



ठंडी हवाओं में गर्म हो गया इलाहाबाद विश्वविद्यालय का माहौल
छात्र नेता व गाड़ों से कहासुनी के बीच खूब चले ईट पत्थर, वरिष्ठ अधिकारियों के समझाने पर माने छात्र

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में छात्रों की पिटाई के बाद सोमवार को जमकर बबल हुआ। उग्र भीड़ ने पथराव, तोड़फोड़ के साथ आगजनी की। कार्यालयों के दरवाजे-खिड़कियों के साथ ही दर्जनों वाहन क्षतिग्रस्त कर दिए। दो बाइकें व जनरेटर फूँकने के साथ कैटीन को भी आग के हवाले कर दिया। आरोप है कि सुरक्षा गार्डों ने छात्रों की पिटाई के साथ ही फायरिंग की। तरह से बंद रखने का निर्णय लिया है। बता दें कि 17 दिसंबर से ही विविध में शीतकालीन अवकाश के चलते शिक्षण कार्य स्थगित है। लेकिन विभागीय कार्य संपादित किए जा रहे थे। हालांकि स्थिति को देखते हुए एक दिन के लिए विविध पूर्ण रूप से बंद करने की घोषणा की गई है। कुछ उपद्रवी तत्वों द्वारा विविध गेट का ताला तोड़ने की कोशिश की गई। रोकने पर उन्होंने सुरक्षाकर्मियों से बदसलूकी और मारपीट की। इसके बाद उपद्रवियों ने परिसर में तोड़फोड़ व आगजनी की। उपद्रवी विश्वविद्यालय के छात्र नहीं हैं। बगाल में दो शिक्षकों की कार क्षतिग्रस्त की गई है। पुलिस का इस पूरे घटनाक्रम को मूकदर्शक बनकर देखना बेहद अफसोसजनक है। विवि के किसी भी गार्ड ने गोली नहीं चलाई। जबकि उपद्रवी तत्वों की ओर से हवाई फायरिंग की गई।

-डॉ. जया कपर, पीआरओ डिविवि

से रोक दिया। इसे लेकर नोकझांक हुई तो एक असिस्टेंट प्रोफेसर के बीचबचाव पर मामला शांत हो गया और विवेकनंद भीतर चले गए।

आरोप है कि कुछ देर बाद बड़ी संख्या में गार्ड डॉर्ट व लोहे की रोड़न व असलहों से लैस होकर आए और छात्रों को पीटना शरू कर दिया।

नेहत्ये छात्रों को दौड़ा-दौड़ाकर पीटा

निहत्ये छात्रों को दौड़ा-दौड़ाकर पीटा गया। आरोप है कि विरोध पर फायरिंग भी की गई। इसकी जानकारी पर बड़ी संख्या में छात्र जुट गए और उन्होंने पथराव करते हुए गाड़ों को खेदड़ लिया। इसके बाद बवाल शुरू हो गया। पथराव करते हुए आगे बढ़े छात्रों ने परीक्षा नियंत्रक, रजिस्ट्रार समेत कई कार्यालयों के दरवाजे-खिड़कियां तोड़ दिए। पुलिस के खदेड़ने पर केंद्रीय पुस्तकालय की तरफ स्टैंड में खड़े शिक्षकों-कर्मचारियों के आठ बाहन क्षतिग्रस्त कर दिए। इसके साथ ही परिसर में खड़ी तीन और यूनियन भवन रोड व बैंक रोड पर एक-एक कारों में भी तोड़फोड़ की। इसके बाद परीक्षा नियंत्रक व रजिस्ट्रार कार्यालय के पास खड़ी दो बाइकें फूँक दी। प्रॉक्टर कार्यालय के पास स्थित कैंटीन व जनरेटर में भी आग लगा दी। सूचना पर कमिश्नर रमित शर्मा, एडिशनल कमिश्नर आकाश कुलहरि, डीएम संजय खत्री डेढ़ दर्जन थानों की फोर्स लेकर मौके पर पहुँचे और किसी तरह रिश्ति नियत्रित की। उधर सुरक्षा गाड़ों की पिटाई में छात्रनेता विवेकानंद पाठक का सिर

फूट गया। इसके अलावा एमए के छात्र अभिषेक यादव का आरोप है कि वह फायरिंग में छोड़े लगने से धायल हुआ है। इसके अलावा छात्र हरेंद्र यादव, मंजीत पटेल, मुवस्सिर हारून, मसद अंसारी भी जखी हुए हैं। इन सभी का मेडिकल कराया गया है। स्थिति पूरी तरह से नियंत्रण में है। छात्रों को समझा दिया गया है और उन्हें आश्वासन दिया गया है कि निष्पक्ष कार्रवाई होगी। सीसीटीवी व वीडियो फूटेज खाली जा रहे हैं और साक्षांक के आधार पर कार्रवाई होगी। - रमित शर्मा, पुलिस कमिश्नर।

मण्डलायुक्त की अध्यक्षता में मण्डलीय उद्योग बन्ध समिति की बैठक सम्पन्न

अखड भारत सदशा

फूलपुर नगर अध्यक्ष के चुनाव में वेश्य समाज हो भाजपा समर्थित उम्मीदवार - रामजी केसरी

अखंड भारत संदेश

A group of people, including men and women, standing on a stage at an award ceremony. They are holding certificates and large red shields. The background features a banner with text in Hindi.

फोटो, वीडियो कार्यालय पर
आवास के लिए फरियाद
लेकर पहचान महिलाएं

रामसागर एवं कमलेश बने महामंत्री

साहू कल्याण समिति के अध्यक्ष बने रामसागर एवं कमलेश बने महामंत्री

二十一

पहुंचाया सीएचसी कोतवाली क्षेत्र

जनता हरबार में विधायक ने सर्वी समझाएँ

Digitized by srujanika@gmail.com

इंडिया, पाना, बजला, आवारा पशु जस कइ विभागों का शिकायत का गई। शिकायत में सबसे बड़ा कानूनी और पशुओं के अवारा होने पर किसान परेशानी का सामना करना पड़ रहा और नाविकों किया गया कि यमुना बातू ठाकेदार नाव से बातू निकलवाकर अपने पट्टा वाले घाट पर लाला आने पर नाविकों के खिलाफ मुकदमा लिखवा दिया जाता है। इस पर विधायक ने नाविकों के लिए कि जब प्रश्नासन को कोई दिक्कत नहीं आप को कोई दिक्कत नहीं है तो ठीक है और जो जल्द ही समस्या का निस्तारण कराया जायेगा। जनता दर्शन में ग्रामीणों और शिकायतकारों ने दिया कि आप लोगों का समस्याओं का जल्द ही निस्तारण किया जाएगा जनता दर्शन द्वारा रुप से थानाध्यक्ष लालापुर शेर सिंह यादव, बिजली विभाग के कर्मचारी, स्वामी बृजेशानंद उपेश शुक्रलाल पांडेय, सरज शुक्रलाल, मुकेश दिवेश, शेर सिंह, होरी लाल के सरवानी, राधा रेश कुमार उर्फ राजू डाक्टर सहित दजनों लोग मौजूद रहे।



संपादकीय

जबरदस्ती की जीएम सरसों

'जीएम' खांवों से जा अनेक स्वास्थ्य समस्याएं जुड़ी हैं वे विशेषकर तिलहन फसलों के संबंध में और भी गंभीर हैं क्योंकि इनसे प्राप्त खाद्य तेलों का उपयोग लगभग सभी तरह के भोजन में होता है। सरसों के तो पत्तियां खाई जाती हैं व इसका औषधीय उपयोग भी होता है। 'जीएम' सरसों का प्रवेश बहुत ही खतरनाक होगा। अनेक विशेषज्ञ पहले ही बता चुके हैं कि 'जीएम' सरसों के माध्यम से उत्पादकता बढ़ाने के दावे निराधार हैं। हाल में 'जीएम' (जेनेटिकली मॉडीफाइड) सरसों पर विवाद फिर तेज हुआ है क्योंकि इसके साथ भारत में इन फसलों के शुरूआत की जा रही है। 'जीएम' फसलों के विरोध की एक मुख्य वजह यह रही है कि ये फसलें स्वास्थ्य व पर्यावरण की दृष्टि से सुरक्षित नहीं हैं तथा उसका असर 'जेनेटिक प्रदूषण' के माध्यम से अन्य सामान्य फसलों व पौधों में फैल सकता है। इस विचार को 'ईडेंपेंट साईंस पैनल' ने बहुत सारांशित ढंग से व्यक्त किया है। इस पैनल में शामिल विश्व के अनेक देशों के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों व विशेषज्ञों ने 'जीएम' फसलों पर एक महत्वपूर्ण दस्तावेज तैयार किया जिसके निष्कर्ष में उन्होंने कहा कि- 'जीएम फसलों के बारे में जिन लाभों का दावा किया गया था वे प्राप्त नहीं हुए हैं। अब इस बारे में व्यापक सहमति है कि इन फसलों का प्रसार होने पर 'ट्रान्सजेनिक प्रदूषण' से बचा नहीं ज सकता। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि 'जीएम' फसलों की सुरक्षा प्रमाणित नहीं हो सकी है। इसके विपरीत पर्याप्त प्रमाण हैं जिनसे इन फसलों के सुरक्षा संबंधी गंभीर चिंताएं उत्पन्न होती हैं। यदि इनकी उपेक्षा की गई तो स्वास्थ्य व पर्यावरण की ऐसी क्षति होगी जिसे फिर ठीक नहीं किया ज सकता। 'जीएम' फसलों को अब दृढ़ता से खारिज कर देन चाहिए।' वैज्ञानिकों के मुताबिक इन फसलों से जुड़े खतरे का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि जब वे पर्यावरण में फैलेंगे तो उन पर हमारे नियंत्रण नहीं रह जाएगा। 'जेनेटिक प्रदूषण' का पूल चरित्र ही ऐसा है वायु-प्रदूषण या जल-प्रदूषण के कारणों का पता लगाकर उन्हें नियंत्रित किया जा सकता है, परं पर्यावरण में पहुंचा 'जेनेटिक प्रदूषण' हमारे नियंत्रण से बाहर हो जाता है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जहां प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों को केवल इस लिए परेशान किया गया या उनका अनुसंधान बाधित किया गया क्योंकि उनके अनुसंधान से 'जीएम' फसलों के खतरे पता चलने लगे थे। इसके बावजूद निष्ठावान वैज्ञानिकों के अथव प्रयासों से 'जीएम' फसलों के गंभीर खतरों को बताने वाले दर्जनों अध्ययन उपलब्ध हैं। जैफरी एम. स्मिथ की पुस्तक 'जेनेटिक रूलेट द गेम्बल ऑफ अवर लाइफ' के 300 से अधिक पृष्ठों में ऐसे दर्जनों अध्ययनों का सार-संक्षेप उपलब्ध है। किताब में चूहों पर हुए अनुसंधानों में पेट, लिवर, आंतों जैसे विभिन्न महत्वपूर्ण अंगों के बुरी तरह क्षतिग्रस्त होने, 'जीएम' उत्पाद खाने वाले पशु-पक्षियों के मरने या बीमार होने और इनसे मनुष्यों में भी गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का वर्णन है। जब 2009-10 में भारत में 'बीटी' बैंगन के संदर्भ में 'जीएम' के विवाद ने जोर पकड़ा तो विश्व के 17 विच्छात वैज्ञानिकों ने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर इस बारे में नवीनतम जानकारी उपलब्ध करवाई। पत्र में कहा गया कि 'जीएम' प्रक्रिया से गुजरने वाले पौधे का जैव-रसायन बुरी तरह अस्त-व्यस्त हो जाता है जिससे उसमें नए विषैले तत्वों का प्रवेश हो सकता है और उसके पोषक गुण कम या बदल सकते हैं 'जीव-जंतुओं को 'जीएम' खाद्य खिलाने पर आधारित अनेक अध्ययनों से पत्ते (प्रिंटरी) उत्पाद (प्रिंटर) ऐसे ज चिन्ह ते अस्टे (प्रा)

से गुड़ (किडना), वेकूत (ललर), पट व निकट के अगा (गट) रक्त-कोशिकाओं, रक्त- जैव-रसायन व प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी सिस्टम) पर नकारात्मक असर सामने आ चुके हैं। 'जीएम' फसल 'बीटी' कपास या उसके अवशेष खाने या ऐसे खेत में चरने के बाद अनेक थेड़-बकरियों के मरने व अनेक पशुओं के बोमार होने के समाचार मिले हैं। डा. सागरी रामदास ने इस मामले पर विस्तृत अनुसंधान किया है। उनके मुताबिक ऐसे मामले विशेषकर आंध्रप्रदेश, हरियाणा व तेलंगाना में सामने आए हैं, पर अनुसंधान-तंत्र ने इस पर बहुत कम ध्यान दिया है। थेड़-बकरी चराने वालों ने स्पष्ट बताया कि सामान्य कपास के खेतों में चरने पर ऐसी स्वास्थ्य समस्याएं पहले नहीं देखी गईं, 'जीएम' फसल के आने के बाद ही ये समस्याएं देखी गईं हैं। हरियाणा में दुधारू पशुओं को 'बीटी काटन' बीज व खली खिलाने के बाद उनमें दूध कम होने व प्रजनन की गंभीर समस्याएं सामने आईं हैं कृषि व खाद्य क्षेत्र में 'जेनेटिक इंजीनियरिंग' मात्र छः-सात बहुराष्ट्रीय कंपनियों व उनकी सहयोगी या उप-कंपनियों के हाथ में केंद्रित है। ये कंपनियां पश्चिमी देशों, विशेषकर अमेरिका की हैं। इनका उद्देश्य 'जेनेटिक इंजीनियरिंग' के माध्यम से विश्व कृषि व खाद्य व्यवस्था पर ऐसा नियंत्रण स्थापित करना है जैसा विश्व इतिहास में आज तक नहीं हुआ है। हाल ही में देश के महान वैज्ञानिक प्रोफेसर पुष्प भार्गव का निधन हुआ है। वे 'सेण्टर फॉर सेल्यूलर एंड मॉलीक्यूलर बॉयलाजी, हैदराबाद' के संस्थापक-निदेशक व 'नेशनल नॉलेज कमीशन' के उपाध्यक्ष रहे। सुप्रीम कोर्ट ने प्रो. पुष्प भार्गव को 'जेनेटिक इंजीनियरिंग पश्चिम कमेटी' (जीईएसी) के कार्य पर निगरानी रखने के लिए नियुक्त किया था। प्रो. पुष्प भार्गव ने प्रखरता के साथ 'जीएम' फसलों का बहुत स्पष्ट और तथ्य आधारित विरोध किया। 'बिजनेस लाईंग' (नवंबर 5, 2015) में 'द केस फॉर बैनिंग जीएम क्राप्स' या 'जीएम फसलों पर प्रतिबंध लगाना क्यों जरूरी है?' शीर्षक से उहोंने एक महत्वपूर्ण लेख लिखा था। इसमें उहोंने लिखा, 'आज सदैच से परे बहुत से प्रमाण हैं कि जीएम फसलें मनुष्यों व अन्य जीवों के स्वास्थ्य के लिए पर्यावरण व जैव-विविधता के लिए हानिकारक हैं।' इसी लेख में उहोंने कहा, 'यदि हम सही विज्ञान के प्रति प्रतिबद्ध हैं व अपने नागरिकों को स्वास्थ्य भोजन उपलब्ध करवाना चाहते हैं तो हमने जैसे 'जीएम' बैंगन पर प्रतिबंध लगाया था वैसे ही हमें 'जीएम' सरसों पर भी प्रतिबंध लगा देना चाहिए। हमें सभी जीएम फसलों को 'नहीं' कह देना चाहिए।'

भारत सक्षम ह मानव-एकता का बल दन म

ललित गग्नी

अंतर्राष्ट्रीय मानव एकता दिवस हर साल 20 दिसंबर को मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य लोगों के बीच मानवीय एकता के महत्व को बताने के लिए, गरीबी पर अंकुश लगाना और विकासशील देशों में मानव और सामाजिक विकास को बढ़ावा देना है। संयुक्त राष्ट्र ने 22 दिसंबर 2005 को यह दिवस मनाने की घोषणा की थी। इस दिवस को विश्व एकजुटा कोष और संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा बढ़ावा दिया जाता है, जो दुनियाभर में गरीबी के उन्मूलन के लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने पर केंद्रित है। इस दिवस को मनाते हुए हर व्यक्ति शिक्षा में योगदान देकर, गरीबों या शारीरिक या मानसिक रूप से अक्षम लोगों की मदद करके अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस दिवस के माध्यम से सरकारों को सतत

विकास लक्ष्य के गरबा आर अन्य सामाजिक बाधाओं का जवाब देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। विविधता में एकता दर्शाने, विभिन्न सरकारों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हुए समझौतों को याद दिलाने, लोगों के बीच एकजुटता के महत्व को बताने, सतत विकास के लिए लोगों, सरकारों को प्रेरित करने, गरीबी को मिटाने के नए रस्ते खोजने एवं लोगों को गरीबी, भुखमरी, बीमारियों से बाहर निकालने के लिए इस दिवस का विशेष महत्व है। इसमें भारत अपनी महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है, जी-20 देशों के समूह की अध्यक्षता का दायित्व भारत ने संभाला है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में इस जिम्मेदारी को संभालने का अर्थ है भारत को सशक्त करने के साथ-साथ दुनिया को मानव एकता की दृष्टि से एक नया चिन्तन, नया आर्थिक धरातल, शांति एवं सह-जीवन की संभावनाओं को बल देना। संयुक्त गष्ठ के अन्यसार हृसंयुक्त गष्ठ के

लतुरा राष्ट्र के जनुता, लैतुरा राष्ट्र का निर्माण ने विश्व के लोगों और राष्ट्रों को एक साथ शांति, मानवाधिकारों और सामाजिक और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए आकर्षित किया। संगठन की स्थापना अपने सदस्यों के बीच एकता और सद्व्यवहार के मूल आधार पर की गई थी, जो सामूहिक सुरक्षा की अवधारणा में व्यक्त की गई थी, जो अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए अपने सदस्यों की एकजुटता पर निर्भर करती है इंतराष्ट्रीय मानव एकजुटता दिवस सतत विकास एवं समतामूलक विकास के एजेंडा पर आधारित है, जो अपने आप में गरीबी, भूख और बीमारी जैसे कई दुर्बल

पहलुओं से लोगों को बाहर निकालने के लिए केंद्रित है। ह्यमिलेनियम डिक्टरेशनन्ड को ध्यान में रखते हुए, एकजुटता को 21वीं सदी में अंतरराष्ट्रीय संबंधों के मूलभूत मूल्यों में से एक माना जाता है, जिसके तहत कम से कम लाभ उठाने वाले और सबसे अधिक मुश्किलों का सामना करने वाले लोग उन लोगों की मदद के योग्य होते हैं जिन्हें सबसे अधिक लाभ मिलता है।

आज समृद्धी दुनिया में मानवीय एकता एवं चेतना के साथ खिलवाड़ करने वाली त्रासद एवं विडम्बनापूर्ण परिस्थितियां सर्वत्र परिव्याप्त हैं-जिनमें आतंकवाद सबसे प्रमुख है। जातिवाद, अस्पृश्यता, सांप्रदायिकता, महार्गी, गरीबी, भिखरणी, विलासिता, अमीरी, अनुशासनहीनता, पदलिप्सा, महत्वाकांक्षा, उत्पीड़न और चरित्रहीनता आदि अनेक परिस्थितियों से मानवता पीड़ित एवं प्रभावित है। उक्त समस्याएं किसी युग में अलग-अलग समय में प्रभावशाली रही होंगी, इस युग में इनका आक्रमण समग्रता से हो रहा है। आक्रमण जब समग्रता से होता है तो उसका समाधान भी समग्रता से ही खोजना पड़ता है। हिंसक परिस्थितियां जिस समय प्रबल हों, अहिंसा का मूल्य स्वयं बढ़ जाता है। महात्मा गांधी ने कहा है कि आपको मानवता में विश्वास खोना नहीं चाहिए। मानवता एक महासागर है। यदि महासागर की कुछ बैंदंगी गंदी हैं, तो भी महासागर गंदा नहीं होता है ल्हूँ ऐसे ही विश्वास को जागृत करने के लिये ही विश्व मानव एकता दिवस की आयोजना की गई है।

गरीबी का व
अप्रामाणिकत
शोषण और
इनके देश
मूर्च्छित कर
मानव एकता
बड़ी बाधाएं
मूर्च्छा को
लिए अहि
सह-अस्तित्व
बढ़ाना हो
सहयोग एवं
पृष्ठभूमि प
समाज-संरचन
परिकल्पना त
होगा। दूसरों
प्रति संवेदनश
आधार तत्व
अस्तित्व की
अपनी सहमति
उसके प्रति स
जिस देश ३
का स्रोत सृ
रिश्टों में लिए
अपने अंग-प्र
तो आत्मा ३
साथ ऐसी घ
एक कोना
संवेदनहीनत
संवेदनहीन
अस्तित्व का
संवेदनशून्य
दर्द, अभाव,
कहीं भी पिघ

पराण हिंसा, आतंक,
संग्रह, स्वार्थ,
कूरता आदि हैं
मानवता को नहीं सकुचाते। हमें
रहे हैं एवं
की सबसे
हैं। इस
पोड़ने के
गा और
का मूल्य
गा तथा
वेदना की
र स्वस्थ
ना की
ओ आकार देना
के अस्तित्व के
लता मानव एकता का
है। जब तक व्यक्ति अपने
तरह दूसरे के अस्तित्व को
नहीं देगा, तब तक वह
वेदनशील नहीं बन पाएगा।
पर संस्कृति में स्वेदनशीलता
ब जाता है, वहाँ मानवीय
जलिजापन आने लगता है।
विषय पर कहीं प्रहार होता है
हत होती है। किंतु दूसरों के
ना धटित होने पर मन का
प्रभावित नहीं होता। यह
की निष्पत्ति है। इस
न की एक वजह सह-
अभाव भी है। आज हम इतने
गये हैं कि औरों का दुःख-
पीड़ा, औरों की आहे हमें
लाती नहीं। देश और दुनिया

में निलोगे। करते हुए वे संवेदना को जगाना चाहते हैं। उसके साथ ने कहा भी है कि उसके के लिये जादू की सेवा करके मानव की सेवा करके ही हैं। इसी मानव-सेवा का एक दिवस का हार्द भी है। इन और मानदंडों की बातें नामा में परिष्कार हो जाती हैं।

विशेषतः दुनया के सबस गराब, सबस हाशिए पर आ गये लोग और कमज़ोर व्यक्तियों को अपार दुःख का सामना करना पड़ता है। मानवतावादी सहायताकर्मी इन आपदा प्रभावित समुदायों एवं लोगों को राष्ट्रीयता, सामाजिक समूह, धर्म, लिंग, जाति या किसी अन्य कारक के आधार पर भेदभाव के बिना जीवन बचाने में सहायता और दीर्घकालिक पुनर्वास प्रदान करने का प्रयास करते हैं। वे सभी संस्कृतियों, विचारधाराओं और पृष्ठभूमि को प्रतिविवित करते हैं और मानवतावाद के प्रति अपनी प्रतिबद्धता से वे एकजुट हो जाते हैं। इस तरह की मानवतावादी सहायता मानवता, निष्पक्षता, तत्स्थिता और स्वतंत्रता सहित कई संस्थापक सिद्धांतों पर आधारित है। मार्टिन लूथर किंग ने इसकी उपरोक्तियों को उजागर करते हुए कहा कि यह घार और स्नेह है, जो हमारी दुनिया और हमारी सभ्यता को बचाएगा। आज अनुभव किया जा रहा है कि देश एवं दुनिया विकृतियों की शूली पर चढ़ा है। नैतिक मूल्यों के आधार पर ही मनुष्य उच्चता का अनुभव कर सकता है और मानवीय प्रकाश पा सकता है। मानव एकता का प्रकाश सार्वकालिक, सावर्देशिक, और सार्वजनिक है।

इस प्रकाश का जितनी व्यापकता से विस्तार होगा, मानव समाज का उतना ही भला होगा। इसके लिए तात्कालिक और बहुकालिक योजनाओं का निर्माण कर उनकी क्रियान्विति से प्रतिबद्ध रहना जरूरी है। यही विश्व मानव एकता दिवस मनाने को सार्थक बना सकता है।

यात्रा

चाक्सू क महामत्रा जगदीश रमन लाखेर। हमने कहा लिख लिया। जब उहोंने हमारी नोटबुक देख ली, इत्तीनान हो गया तो बोले- यह तो महाकुंभ है। सब में उत्साह का संचार हो गया है। डर निकल गया है। हमारे साथ दस व्यापारी आए हैं। इनमें से तीन भाजपा के भी हैं, इन्हें ही कांग्रेस के और बाकी का किसी दल से कोई खास लगाव नहीं है। शुद्ध व्यापारी हैं। उहोंने आवाज लगा-लगाकर सबको बुलाना शुरू किया। मगर हमने कहा आप बताते जाइए। तो बोले कि अभी हम सब बात कर रहे थे कि यह आदमी (राहुल) कर तो गजब काम रहा है। सो दिन से लगातार चल रहा है। वोट नहीं मांगता। राजनीति की बात नहीं करता। और सबके मुद्दे उठा रहा है। भई हम लोग तो धर्मपरायण लोग हैं। मानते हैं कि भारत भूमि पर समय-समय पर ऐसे लोग पैदा होते रहते हैं जो जनता के दुःख दर्द को समझते हैं। राहुल जी हमेंऐसे ही शुद्ध आमा लगे जो सबकी सोचते हैं। जौएसटी पर जैसा वह बोलते हैं। कोई नहीं बोलता। ऐसे ही व्यापार के एकधिकार पर। हम छोटे व्यापारी खत्म हो जाएंगे। इतने में तीर्थनारायण पीपलीबाल आ गए। बोले-इसी राजस्थान से देश क्या पूरी दुनिया में व्यापारी गए हैं। पैसा भी कमाया, नम भी

पूस की सुबह और भारत जोड़ो यात्रा

शकाल अख्तर

व्यापारा आमतर पर भाजपा समर्थक होता है। नहीं भी होता तो खुलकर उसके खिलाफ नहीं बोलता। मगर यह राहुल की यात्रा की बड़ी कामयाबी है कि व्यापारियों में से भी डर खत्म हुआ है। वे अपने बच्चों के भविष्य को लेकर चिंतित हैं। कह रहे थे छोटा व्यापार खत्म हो जाएगा। नौकरी पहले ही खत्म कर दी हैं। जमीन हमारे पास है नहीं। बच्चे करेंगे क्या? भारत जोड़े यात्रा का सौवां दिन। शुक्रवार, 16 दिसंबर। जगह दौसा, राजस्थान। समय सुबह के ठीक छह बजे। खुब अंधेरा और उससे ज्यादा ठिठुरन भरी तेज सर्दी। जैकेट, मफलर में भी कंपकंपाहट और राहुल गांधी सड़क पर आ गए। अपनी उसी सफेद हाफ टी शर्ट में। एक हाथ पैट की जेब जरूर था। मगर दूसरा लोगों की तरफ हिलाते हुए उस सर्दी में सुख पांच बजे से लोग यात्रा में शामिल होने, राहुल से मिलने, राहुल को देखने के लिए इकट्ठा होना शुरू हो गए थे। सड़क के किनारे जगह-जगह लोगों ने अलाव जला लिए थे। लेकिन जैसे ही राहुल करीब आना शुरू होते थे। लोग अलाव छोड़कर उनके साथ भागते थे। राहुल चलते हैं। मगर साथ के लोगों को भागना पड़ता है। राहुल ने बहुत जोर देकर कहा कि मेरी गणधर्मी से तुलना मत

पड़गा तक गाधजा भा बहुत तज चलत थ। लंबे-लंबे डग भरते हुए। यह सीखा या सिखाया नहीं जा सकता। बचपन का ही स्वभाव होता है। लंबे कदम रखना। उस दिन राहुल ने करीब छह, साढ़े छह घंटे में 26 किलोमीटर की यात्रा पूरी की थी। जिसमें से करीब आधी दूरी हमने भी पैदल चल कर पूरी की थी। बाकी आधी इसलिए नहीं की हमें बीच-बीच में अपनी पत्रकारिता का काम भी करना होता था। मोबाइल से फोटो खींचना। कुछ नया हो तो उसकी जानकारी ट्वीट करके देना। लोगों से बात करना और फोन आने पर सबको बताना कि क्या हो रहा है। कैसा माहौल है और राहुल के साथ कौन चल रहा है। नेता मित्रों को दिलचस्पी सबसे ज्यादा इसी में होती थी कि अभी कौन राहुल के साथ है? उसे कितना रिस्पांस मिल रहा है? तो बता रहे थे अलाव की बात। सर्दी में उत्तर भारत के लोगों को इससे प्रिय और क्या है! राजस्थान में वैसे भी बहुत सर्दी पड़ती है। और उस समय तापमान था 6 डिग्री सेल्सियस। उस समय अलाव को छोड़ने से बड़ी हिम्मत की बात कोई और नहीं हो सकती। मगर यह यात्रा का आकर्षण था, राहुल की कामयाबी कि लोग अलाव छोड़-छोड़ कर उनके साथ भाग रहे थे। एकदम

आग तपना छाड़कर उस दखन भागता था। मगर दो फिर भी बैठीं आग तपती रहती थीं। पूस की सर्दी में ही आग और उसकी गमहिट ने हल्कू की पूरी फसल चरवा दी थी। अभी पूस ही चल रहा है और इसमें पूस की सुबह हमने कई सूने अलाव देखे। उनका फाटो भी खींचकर उसी समय ट्वीटर पर डाला था। प्रेमचंद की पूस की रात तो कई बार पढ़ी मगर पूस की ऐसी सुबह पहली बार देखी। हम खुद हाथ गर्म करने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहे थे। मग अकेले आग तपना चाहे दो मिनट के लिए ही क्यों न हो बहुत अजीब लग रहा था। और फेटो खींचने के अलावा हम उस आग के पास भी नहीं जा पाए। यात्रा तो वैसे दिन भर बहुत उत्साह और जोश में होती है। मगर सुबह का नजारा ही अलग होता है। सड़क के किनारे कहीं लैम्प पोस्ट जलते हैं। कहीं धूप अंधेरा होता है। तो कहीं पीछे चल रही गाड़ियों की हेड लाइट अचानक कौंध कर जगमगाहट कर देती है। तो कभी बस कैमरों की फलश लाइट की रोशनी ही चमकती रहती है। मगर इस अंधेरे, उजारे में साथ बज रहे गीत साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल की आवाज से लेकर बापू के प्रिय भजन वैष्णव जन तो तेने कहिए का धुन एक अजीब सी

चाकसू क महामत्रा जगदाश रमन लालखेण। हमने कहा लिख लिया। जब उन्होंने हमारी नोटबुक देख ली, इत्मीनान हो गया तो बोले- यह तो महाकुर्भ है। सब में उत्साह का संचार हो गया है। डर निकल गया है। हमारे साथ दस व्यापारी आए हैं। इनमें से तीन भाजपा के भी हैं, इतने ही कांग्रेस के और बाकी का किसी दल से कोई खास लगाव नहीं है। शुद्ध व्यापारी हैं। उन्होंने आवाज लगा-लगाकर सबको बुलाना शुरू किया। मगर हमने कहा आप बताते जाइए। तो बोले कि अभी हम सब बात कर रहे थे कि यह आदमी (राहुल) कर तो गजब काम रहा है। सौ दिन से लगातार चल रहा है। बोट नहीं मांगता। राजनीति की बात नहीं करता। और सबके मुद्दे उठा रहा है। भई हम लोग तो धर्मपरायण लोग हैं। मानते हैं कि भारत भूमि पर समय-समय पर ऐसे लोग पैदा होते रहते हैं जो जनता के दुःख दर्द को समझते हैं। राहुल जी हमें ऐसे ही शुद्ध आत्मा लगे जो सबकी सोचते हैं। जोएसटी पर जैसा वह बोलते हैं। कोई नहीं बोलता। ऐसे ही व्यापार के एकाधिकार पर। हम छोटे व्यापारी खत्म हो जाएंगे। इतने में तीर्थनारायण पीपलीबाल आ गए। बोले- इसी राजस्थान से देश क्या पूरी दुनिया में व्यापारी गए हैं। पैसा भी कमाया, नाम भी

परीक्षाओं की तैयारी कर रहे छात्रों में आत्महत्या के बढ़ते मामले

प्रियंका सौरभ
लेखन नाम

नशनल क्राइम एकाडीस ब्यूरो का एक्सीडेंटल डेथ्स एंड सुसाइड इन ईंडिया रिपोर्ट से पता चलता है कि आत्महत्या से छात्रों की मौत की संख्या में 4.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जिसमें महाराष्ट्र में सबसे अधिक मौतें हुईं, इसके बाद मध्य प्रदेश और तमिलनाडु का स्थान रहा। रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले पांच सालों से छात्रों की आत्महत्या के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। छात्रों में आत्महत्या के बढ़ते मामलों के पैंछे करणों में बेरोजगारी दर बहुत अधिक है। सिक्किम में, राज्य की लगभग 27% आत्महत्याएँ बेरोजगारी से संबंधित थीं और 21 से 30 वर्ष की आयु के बीच सबसे आम पाई गई। परीक्षा रेटिंग सिल्ला से शामिल होने वाले प्रदेशों के अकादमिक उत्कृष्टता की तुलना करना महत्वपूर्ण कारक है। ऐसा क्या है जो छात्रों को आत्महत्या के लिए इन्हाँ प्रवृत्त करता है? भारत में किसी भी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे किसी भी छात्र के साथ एक साधारण साक्षात्कार, चाहे वह जेईई, एईईटी या सीएलएटी हो, यह प्रकट करेगा कि छात्रों के बीच मानसिक संकट का प्रमुख स्रोत उन पर दबाव की असहनीय मात्रा है जो लगभग हर एक द्वारा ढाला जाता है। उन कुछ वर्षों की अवधि के दौरान जो हम छात्र एक प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी के लिए अलग रखते हैं, हर शिक्षक, हर रिशेदार और हर चाची या चाचा नहीं अपना अपना अपना अपने दाहरत ह। जबकि छात्र स्कूल से स्नातक होने के बाद क्या करने की आकांक्षा रखता है, या जहाँ उसकी सुनियाँ हैं, उसके बारे में सहज पृथक्तात्त्व की बहुत सराहना की जाती है और यहाँ तक कि हमें प्रेरित भी करती है, विशेष रूप से कुछ मातापिता, कई रिशेदारों और अधिकांश कोचिंग क्लास के हाथों लगातार होने वाली बहस प्रशिक्षकों का निश्चित रूप से हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। इससे यह सवाल उठता है कि छात्रों के दिमाग से दबाव को कम करने के लिए क्या किया जा सकता है। इस प्रश्न का उत्तर इन्हाँ जटिल नहीं है और वास्तव में यह हमारी आँखों के पासाएँ है। ऐसे परीक्षा रेटिंग सिल्ला नहीं जायेंगे, उनके बारे में यह आरंभिक उत्तर है। इन सभी परीक्षाओं की अत्यधिक जटिल प्रकृति (सभी नहीं) का अनिवार्य रूप से मतलब है कि उन्हें पास करने के लिए माता-पिता को अपने बच्चों को प्रतिष्ठित कोचिंग सेंटरों में दाखिला दिलाने का सपना पूरा करना होगा, इससे छात्र के लिए एक से अधिक तरीकों से समस्या बढ़ जाती है क्योंकि वह कोचिंग पर माता-पिता द्वारा खर्च किए गए पैसे को चुकाने के लिए अब परीक्षा को पास करने का दबाव बढ़ गया है और उसे कोचिंग संस्थान के अतिरिक्त दबावों का भी सामना करना पड़ता है। जब तक देश की परीक्षा संस्कृति से इस कुत्सित व्यवस्था को समाप्त की जाया जाता है, तब तक लालों में यह आरंभिक पाठ्यक्रमों और परीक्षा के नवीन तरीकों को नहीं जायेंगे? पकड़े जायेंगे तो वह निर्देशक के प्रत्युत्तर में सिर हिला दिया। निर्देशक के एक्शन कहने के साथ अभिनय शुरू हुआ। कैमरामैन का कैमरा कलाकार पर केंद्रित था और कलाकार का ध्यान संवादों पर। कलाकार अपने अभिनय संवादों में बहते हुए कहने लगा: नमस्कार दर्शकों आज मैं सिखाऊँगा कि हमें किसी का खून करने के लिए तैयारी कैसे करनी चाहिए? होता यूँ है कि कई लोगों के भीतर जुर्म करने का कीड़ा मचलता रहता है। लेकिन उन्हें यह नहीं पता कि जुर्म कैसे करें। मन में रह-रहकर खाल आते रहते हैं कि जुर्म करने पर कहीं पकड़े तो नहीं जायेंगे? पकड़े जायेंगे तो कलाकार अपनी धारा प्रवाह में संवाद कहने की जगह उसमें जीने लगा और कहा: तो आज हम आपको चुटकियों में जुर्म चैनल के जरिए अपराध की दुनिया में न केवल प्रवेश करना सिखायेंगे बल्कि उसमें निपुण भी बनायेंगे और तभी वहाँ एक पुलिस अधिकारी आ गया। जब उसे निर्देशक से पता चला कि वह जुर्म की दुनिया में प्रवेश करने और निपुण बनने के लिए वेब सीरिज बना रहा है तो उसका माथा ठनका। वह निर्देशक की क्लास लगाने ही वाला था कि निर्देशक बोल पड़ा देखिए साहब! आजकल यूट्यूब पर गलाकाट कॉम्पटीशन चल रहा

